

प्रकाशनक
पन्द्रहम वर्ष

वेदन्ता

मार्च
१९३३

द्वितीय सम्मेलनपर

I acknowledge with gratitude, the receipt of the papers sent by you.

The second conference of All India Maithili Writers Conference must be deemed to be very successful, considering this output.

I have particularly liked the section, *Nibandhavibhag*, dealing with critical examination of topics. Such a critical survey promotes scope for better appreciation of literary values.

It was a happy thought to invite to this conference writers interested in Maithili language and literature. I have no doubt that in the future the conference will play a more and more significant role.

—S. V. Sohoni I. C. S.
Commissioner, Patna Division

संस्थापकक प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

संपादक



प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'

श्रीकृष्णकान्तमिश्र



एक प्रति ३७
विशेषांक ७५
वार्षिक ४)
आजीवन ५१)
संरक्षक १२५)

[निःशुल्क डाक-व्यय]



श्रीकृष्णकान्तमिश्र
द्वारा दरभंगा प्रेस
कम्पनी (प्रा०) लि०
दरभंगामे मुद्रित
एवं प्रकाशित



प्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति,
लालबाग, दरभंगा

कथा

समाधान श्रीगोपालजीभा 'गोपेश'

१०६

भक्तजोगनी श्रीशुभचन्द्रचौधरी १२६

बड़कूधर खजूड़क भड्ड

श्रीशिवशंकरमिश्र 'नृसिंह' १३६

आलोचना-लेख

प्रो० श्रीहरिमोहनभा :

मैथिलीकल्लोकाप्रय लेखक श्रीशशिनाथचौधरी १३१

कविता

चैत-वसन्त श्रीरामचन्द्रभा 'चन्द्र'

१०८

बलिदान हिमालय माडि रहल

श्रीकलानन्दभट्ट १०८

स्तम्भ

विद्यापति परिषद्क उद्घाटन संक्षिप्त विवरण १४५

स्मृति-पत्रिका पुस्तक-परिचय १४६

दृढ़ प्रतिज्ञा

राष्ट्रीय जनजागरण ओ एकताक हेतु मैथिलीक समस्त साहित्यकार
जन, मन ओ धनसँ राष्ट्रक संग छथि ।

प्रत्येक साहित्यकार देशक एहि संकटकालीन स्थितिमे मितव्ययिता
एवं धन-स्वर्ण-दान-अभियानमे संलग्न छथि ।

चैत-वसन्त

श्रीरामचन्द्रभा 'चन्द्र'

चैत रे मासे, मधुवन हारि के सगुनमा ।
नव नव पात कुसुम लतिका तरु, आव भेलइ पोढ़श नयनमा ॥
चित्रित किसलय चदरि सम्हारल, लाजलि कोइलि वयनमा ।
अरुण गुलाव बनल रङ कुसमय, पूरल करत चयनमा ॥
यमुना तट वट निरखए छन छन, देरए पथ दरशनमा ।
अलिकुल श्याम भ्रमर मधु ताकए, चाहए प्रेम मिलनमा ॥
चन्द्र किरण कुमुदिनि रवि सरसिज, देखुअ विमल गगनमा ।
भारत भाग सराहि चलुअ भव, शंकर उमय सिमनमा ॥

बलिदान हिमालय माडि रहल

श्रीकलानन्दभट्ट

बलिदान हिमालय माडि रहल	चेला भऽ कऽ गुरुक पोठमे
बलिदान करू बलिदान करू	नहुँ आवि वेधलक तेज वाण
वन - मन दऽ सर्वस्व बन्धु उठु	कथमपि न ओकर विश्वास बन्धु
शीघ्र हिमालय त्राण करू	छै वर्वरता सँ भरल ज्ञान
संस्कृति ध्वज रूप हिमालय	ई युद्ध विराम ई सन्धि न थिक
मुकुट भारतक दिव्य हिमालय	ओ बना रहल अछि अपन काम
उमा-शम्भु नित रमथि जतय ओ	नहि जानि करत की कखन दुष्ट
कानि रहल अछि भव्य हिमालय	छै परल जगत मे नीच नाम
लऽ तोप, टैंक, बन्दूक दुष्ट	जातक न उलटि सीमा लाँघय
चीनी केँ मट संहार करू	तातक न चैन आराम करू

रामाधान

भीमोपालजीभा 'गोपेश'

शोभा— डैडी, हमरा शेक्सपीयर आ' कालिदासपर किछु मसाला चाही; काहि रेडियोमे हमर वार्ता थिक। शोभाक माए— आश्रय) मसाला ! भला ई कतएसँ मसाला देखुन; ने कहियो शेक्सपीयर पढ़लनि आ' ने कालिदासे । के. पी. भा— अहाँक कमपात एहन सन जे शेक्सपीयर आ' कालिदासपर अहाँक पुस्तक अधिकार होनि । शोभाक माए— ताहूमे सन्देहे बुझि पड़ैछ ? शोभा— मम्मी, नाना कथीक प्रोफेसर छलथिन्ह ? शोभाक माए— ओ कोनो छुंटी-फंठी प्रोफेसर छलाह ! अंगरेजीक नामी गामी प्रोफेसर रहथि; आ' शेक्सपीयरपर तँ हुनका ततेक अध्ययन छलैन्हि जे के-के ने हुनकासँ सीखए पढ़ए अवैत छल । ताहूपर तोहर पापा हमरा पुरुखाकेँ मोजर नहि दैत छथुन । के. पी. भा— (शोभासँ) शोभा, तोहर माए गप्पक खेती करब खूब जनैत छथुन । हिनकासँ शास्त्रार्थ करबमे कोनो पंडित ने ठठि सकैछ । शोभाक माए— (हँसैत) बेस, आव काजक गप्प करू । बहुत भेल ।

पुरुष-पात्र

स्त्री-पात्र

के. पी. भा [एस. डी. ओ.]

शोभाक माए

सेकेन्ड अफसर

शोभा

नरेश

मिस मालती

गणानाथ

दुनदुनमा

पहिल दृश्य

[फोनक घंटीक शब्द]

के. पी. भा—(रिसीवर उठवैत) के. पी. भा स्पीकिंग। हँ, हँ, कहल जाए। सिक्स्थ इयर फिर्नोसकी। जी ! जी नहि...हँ हँ, पाछाँ गप्प होएत। (रिसीवर राखि दैत छथि।)

शोभाक माए—किनक फोन छल ?

के. पी. भा—गणानाथक।

शोभाक माए—कतएसँ फोन कएने छलाह ?

के. पी. भा—पोस्ट ग्रेजुएट-होस्टलसँ।

शोभाक माए—की बात छलैक ?

के. पी. भा—वएह बात लए केँ फोनपर फोन कए रहल छथि।

शोभाक माए—की जबाब देलिअनि ?

के. पी. भा—जबाब दितिअनि ! जखन शोभा स्वयं सिक्स्थ इयरमे अछि, तखन सिक्स्थ इअरक विद्यार्थीक कोन चर्च ?

शोभाक माए—मुदा किछु निर्णय तँ कएनहि कुशल !

के. पी. भा—से बड़ बढ़िआँ। मुदा !

शोभाक माए—मुदा की ?

के. पी. भा—मुदा, कमसँ कम एकटा सब-डिप्टी कलक्टरसँ कम ओहदावलासँ हाथ धरओने तँ हँसिए होएत। शोभा एस. डी. ओ.क बेटी थिक, से किएक बिसरि जाइत छी ?

शोभाक माए—मुदा एहि प्रसंग शोभाक विचारपर सेहो तँ ध्यान राखए पड़त। जँ ओ सब-डिप्टिओसँ विवाह करबा लेल तैअर नहि भेल तखन ?

के. पी. भा—एना कियेक बजैत छी ? हमहू तँ सब-डिप्टिएसँ आइ एस. डी. ओ. भेलहुँ अछि ।

शोभाक माए—आब अहाँक जमाना नहि रहल । आइ जनीजात सेहो हाकिम बनि सकैछ । जनैत छी ! अपनो शोभा पब्लिक सर्विस कमीशनक परीक्षा दए रहल अछि । आ' जगदम्बाक कृपा रहलनि तँ ओ डिप्टी मैजिस्ट्रेट अवश्ये टा होएत ।

के. पी. भा—अहाँक कहबाक अर्थ भेल जे ओकरा हेतुएँ आइ. ए. एस. बर तकबाक चाही ।

[शोभाक प्रवेश]

शोभा—डैडी, हमरा शेक्सपीअर आ' कालिदासपर किछु मसाला चाही; कालिह रेडिओमे हमर वार्ता थिक ।

शोभाक माए—(आश्चर्य) मसाला ! भला ई कतएसँ मसाला देखुन; ने कहिओ शेक्सपीअर पढ़लनि आ' ने कालिदासे ।

के. पी. भा—अहाँक क्रमपात एहन सन जे शेक्सपीअर आ' कालिदासपर अहाँक पुरुखाक अधिकार होनि ।

शोभाक माए—ताहूमे सन्देहे बुझि पड़ैछ ?

शोभा—मम्मी, नाना कथीक प्रोफेसर छलथिन ?

शोभाक माए—ओ कोनो छंटी-फंठी प्रोफेसर छलाह । अंगरेजीक नामी-गामी प्रोफेसर रहथि; आ' शेक्सपीअरपर तँ हुनका ततेक अध्ययन छलैन्हि जे के-के ने हुनकासँ सीखए-पढ़ए अबैत छल । ताहूपर तोहर पापा हमरा पुरुखाकेँ मोजर नहि दैत छथुन ।

के. पी. भा—(शोभा सँ) शोभा, तोहर माए गप्पक खेती करब खूब जनैत छथुन । दिनकासँ शास्त्रार्थ करबामे कोनो पंडित ने ठठि सकैछ ।

शोभाक माए—(हँसैत) बेस, आब काजक गप्प करू । बहुत भेल ।

के. पी. मा—हमरा मुँहसँ तँ एक शब्द बहरपयो ने कएल कि अलगट्टे चिल्लोरि जेकाँ अहाँ गप्प कोकि लेलिपेक ।

शोभा—डैडी, हमर सम्मी बी. एल. पढ़ितए तँ नीक ओकील होइत ।

के. पी. मा—ताहूमे कोनो सन्देहे ! तोइर वार्ता काहिइ कत्तन छिअह ?

शोभा—सवा नओ बजे रातिमे ।

के. पी. मा—बेस, सेकेन्ड अफसरक ओतए किछु पोथीक बेँओत मए जेतह । ओ अंगरेजीक विलक्षण विद्वान् छथि ।

शोभा—आ' कालिदासपर सेहो तँ किछु मैटर चाही ?

के. पी. मा—कालिदास पर !

शोभाक माए—सोचैत की छी ? थर्ड आफिसरक ओतएसँ कालिदासपर पोथी सब आनि दिअौक ने !

के. पी. मा—लक्षण लगैत अछि जे अहाँ लालबुभुक्करि होइ ।

शोभा—डैडी, लालबुभुक्करि ककरा कहैत छैक ?

के. पी. मा—जे कोनो बातकेँ अलगट्टे मारि दैत छैक ।

शोभाक माए—कनेक उदाहरणो दिअौक ।

के. पी. मा—उदाहरण तँ अहाँ थिकहुँ । अहाँ सन लालबुभुक्करि पकटा बनसोकेँ देखि कए को कहलकैक से जनैत छी ?

शोभाक माए—की कहलकैक ?

के. पी. मा—कहलकैक जे :

लाल बुभुक्करि बूझि गयो है
ओर न बूझै कोई
हंसुआ केँ जे बच्चा हेराया
सैह दुपकटुआ होई ।

शोभाक माए—(हँसैत) आइ एकटा नव गप्पक पता लागल ।

के. पी. भा—से की ?

शोभाक माए—इएह जे अहाँ एस० डी० ओ०क संग-संग एकटा कवि सेहो छी ।

के. पी. भा—वाह, वाह, वाह ! बहुत दिनपर हमर कविकेँ चीन्हल अछि अहाँ ।

शोभा—डैडी, एखन तँ अहाँकेँ कालेज - मीटिंगमे सेहो जएबाक अछि ?

के. पी. भा—हँ, हँ मोन पड़ल । आइ गवर्निंग बडीक मीटिंग छैक । हम तँ बिसरिए गेल छलियेक । भने मोन पाड़ि देलह ।

दोसर दृश्य

[स्थान—कालेज कॉमन रूम]

[दूरसँ मैथिली लोकगीत सुनि पड़ि रहल अछि]

मिसमालती—की औ गणानाथजी, गीत रुचिपर चढ़ै अछि ?

गणानाथ—भला कहूँ तँ, गीतो ककरो बेजाए लगैत छैक ! परोक्षाक तैआरी अछि साढ़े बाइस; तखन गातो कोना ने नीक लागऽ ।

मिसमालती—एकर अर्थ भेल जे जकरा परोक्षाक तैआरी रहै छैक तकरा गीत नहि सोहाइत छैक ।

गणानाथ—ओना अहाँकेँ जे अर्थ लगएबाक हो से लगा लिअ, मुदा हम अभ्यन्तरक गप्प बाजि देल ।

मिसमालती—गणानाथजी, आइ० ए० मे लॉजिक अहाँ पढ़ने छलहुँ ।

गणानाथ—(हँसैत) बूझि पड़ैछ जे अहाँ अरास्तूक लॉजिक घोरि कऽ पीबि नेने छी ।

मिसमालती—ओ ! ओ आव धूमल । लॉजिकक छूति अहाँकेँ
अवश्य अछि ।

गणानाथ—तेँ ने हम बिनु पेनीक गप्प करैत छी ।

मिसमालती—तँ हम सरिपहुँ मानि लिअ जे अहाँकेँ परीक्षाक
तैयारी नहि अछि ?

गणानाथ—लिअ, जनउ छूवैत छी । हम तँ सोचि रहल छी जे एहि
वेर हॉप कए दी ।

मिसमालती—एहनो गलती केओ करैत अछि । बड़ हैत तँ थर्ड
क्लास ।

गणानाथ—बड़ अलच्छि छी अहाँ यै !

मिसमालती—(हँसैत)—अहाँकेँ लागल किएक ? यहाँ क्लास तँ
मनुक्खेकेँ होइत छैक ।

गणानाथ—भरिसक अहाँ हमर पञ्जिला रीजल्ट नहि जनैत छी, तेँ
एहन गप्प कए रहल छी । हम बरोबरि नीके करैत अपलहुँ अछि ।

मिसमालती—रोल नम्बर १६ बजैत छलि जे अहाँकेँ बी० ए० मे
ऑनर्स नहि भेटल छल ।

गणानाथ—जँ एक - आध नम्बरसँ नहिये भेटल तँ कोन भारी
अन्हेर भए गेलैक । एक - आध नम्बरसँ छूटवकेँ हम छूटव नहि वूमैत
छिएक ।

मिसमालती—गणानाथजी, हमरा आई० ए० मे तीन नम्बर सँ
फास्ट डिवीजन छूटल छल, तेँ कि हम फास्ट डिवीजन उत्तीर्ण मानल जाएव ?

गणानाथ—अहाँक बात हमरा सँ भिन्न अछि । अहाँकेँ तीन नम्बरसँ
छूटल छल, मुदा हमरा तँ एक्के नम्बर सँ छूटल ।

मिसमालती—तँ एकर अर्थ भेल जे अहाँ बी० ए० आनर्स छी ?

गणानाथ—अहाँ तँ आमकेँ कटहर बूझि गेलिएक । हमर कहवाक तँ ई मतलब डल जे अहाँकेँ जे सेकेन्ड डिवीजन भेल से योग्यताक अनुकूल बा' हमरा आँस छूटल संयोगे सँ ।

मिसमालती—व्याख्या त अहाँक नीक रहल गणानाथजी ! मुदा हम तँ किछु दोसरे बात बूझैत छी ।

गणानाथ—सेहो कहिये दिअ ।

मिसमालती—अहाँ अभागल छी, तेँ ने एक नम्बरसँ छूटल ?

गणानाथ—क्षमा करब मिसमालती, अहाँ हमर अदृष्टक उपहास कए रहल छी ।

मिसमालती—गणानाथजी, अहाँ हमरा 'मिस ग्रैंडरटैंड' जुनिकरू ।

गणानाथ—मालती, हमरा तँ एना बूझि पड़ैछ जे अहाँ हमरा भाग्यक खिस्सा करैत छी । कखनहुं-कखनहुं अहाँक गप्प पर हम सोचितहि-सोचितहि छगुन्ता से पड़ि जाइत छी ।

मिसमालती—मनोविज्ञानक भाषामे अहाँकेँ आत्म-विश्वासक अभाव अछि । जँ बेओ कहए जे कौआ अहाँक कान लए गेल तँ पहिने अपन कान देखब वा कौआकेँ खेहारब ?

गणानाथ—से देखब तँ पहिने अपन काने ।

मिसमालती—तखन ?

गणानाथ—वेस अपन हाल कहू । अहाँक तैआरी केहन अछि ?

मिसमालती—तेहन तैआरी अछि जे थर्ड क्लास नहि होमक चाही ।

गणानाथ—मालती, अहाँकेँ अपना उप्पर एतेक भरोस अछि ?

मिसमालती—अवश्य । भरोसे पर संसार चलैत छैक ।

गणानाथ—तँ हमहू भरोस करू ?

मिसमालती—ताहूमे पुढ़वेक काज ।

गणानाथ—अपना पर वा अहाँ पर ?

मिसमालती—बाद रे अहाँक अकिलदानी !

गणानाथ—मिस मालती, अहाँ तँ हमरा बात - बात पर बनचैत रहैत छी । अहाँकेँ कतेक बुझाउ । अहाँ साहित्यिक गंभीर छाया छी । मुदा, आश्चर्य अछि जे हमर साधारण बात अहाँकेँ बुझौअलि लगैछ !

मिसमालती—जखन जीवने एकटा बुझौअलि थिकैक, तखन अहाँक गप्पक कोन महत्व ?

गणानाथ—फेर वैह फिलॉसफी !

मिसमालती—‘अभिधा’ आ ‘लक्षण’क नाम सुनलियेक अछि ?

गणानाथ—हमर विषय थिक अर्थशास्त्र, एहिमे तँ अभिधा आ लक्षण एखन धरि नहि पाओल अछि, तखन आगौं भेटए से नहि कहि सकैत छी ।

मिसमालती—कने रेडिओ द्यून करू तँ ?

गणानाथ—बेस ।

[रेडिओ सँ फिल्म संगीत भए रहल अछि । सौ साल पहले.....
...कल भी रहेगा ! जब प्यार किसीसे होता है—रेकर्ड]

मिसमालती—(दू मिनटक बाद)—केहन लगैत अछि ?

गणानाथ—मिसमालती, हमरा हृदय पर ठेस लगाकेँ, अहाँकेँ कोन लाभ होइछ ?

मिसमालती—अहाँक बात समटा ‘ननसेन्स’ होइछ । अहाँ सभ दिनुक बोलले रहि गेलहुं ।

गणानाथ—बेस, जे संज्ञा देब से दिअ । रास्ता पर कहियो ने कहियो अएनहि कुशल । एखन चललहुं । फोर्थ पीरियडमे डाक्टर भाक क्लास अछि ।

मिसमालती—(उत्तेजित होइत)—खुसीसँ जाउ ।

मिसमालती—(स्वगत) ई बेचारे एखन कल्पनाक महल ठाढ़ कए रहल छथि । जखन आकाससँ खसताह तखन बूझि पड़तनि । बेस आब हमरो चलबाक चाही ।

तेसर दृश्य

शोभा—(दुनदुनमासँ)—दुनदुनमा, दुनदुनमा !

दुनदुनमा—की कहैत छी दाइ !

शोभा—देखो तँ के अपलाह अछि ?

दुनदुनमा—बेस !

शोभा—(गुनगुनाइत छथि ।)

सुतलि छलहुँ हम घरबा रे, गरबा मोतिहार

राति जखन भिनुसरबा रे, पहु आएल हमार ॥

दुनदुनमा—दाइ, सेकेन्ड अफसर छथोन ।

शोभा—ड्राइंगे रूम मे बजौने अबहुन ।

[जूता पहिरिकेँ चलबाक शब्द]

सेकेन्ड अफसर—कहू शोभा, की समाचार ?

शोभा—(सेकेन्ड अफसरसँ)—प्रणाम । सभटा ठीके छैक ।

सेकेन्ड अफसर—बाबूजी कतए छथि ?

शोभा—बैसल जाए, तुरन्ते अबैत छथि ।

सेकेन्ड अफसर—सूनल अछि जे अहाँकेँ अंगरेजी लिटरेचरसँ खूब प्रेम अछि ।

शोभा—जी हँ ।

सेकेन्ड अफसर—एम० ए० मे हमरो अंगरेजिये छल ।

शोभा—हँ । डैडी बजैत छलाह । कहैत छलाह जे शेक्सपीयर पर अहाँक ओतए किछु सामग्री सेहो भेटि सकैछ ।

सेकेन्ड अफसर—हमर स्पेशल पेपर छल ट्रैजेडी । आ' शेक्सपीयर पर तँ हम कतेको लेख लिखि चुकल होएब ।

शोभा—ककाजी, तखन तँ अहाँक निमित्त शिक्षा विभाग उपयुक्त छल ।

सेकेन्ड अफसर—से उपयुक्त तँ छल, मुदा लोक सोचैत अछि किछु आ' होइत छैक किछु । अहाँ अपनहि बाबूजीकेँ लग लिअ । दिनक इच्छा छलैन्हि वकालत करक, आ' भए गेलाह एस० डी० ओ० ।

शोभा—हमरा सब दिनस एक्जिक्‍यूटिव लाइनमे जएबाक विचार रहल अछि । एहि बेर कमीशनमे बइसल छलिपेक । मौखिक परीक्षा सेहो भए गेल ।

सेकेन्ड अफसर—वाह ! अहाँक विचार बड़ सुन्दर अछि । एहि क्षेत्रमे अपना दिसक खिगण छथियो कम्मे । अहाँसँ सभकेँ प्रेरणा भेटतनि ।

शोभा—हमरा लोकनिक समाज कतेक पाछाँ अछि, से अपने नहि जनैत छिपेक ककाजी ! एहि क्षेत्रमे खिगण जं डेग उठाओत तँ चारुकातसँ ओकर खिधांसे हेतैक । मुदा हमरा तँ लोकक खिधांसक एको रत्तो चिन्ता ने अछि ।

सेकेन्ड अफसर—(प्रसन्न होइत)—वेरी गूड । अहीं सन - सन ललनासँ देश ओ समाजक कल्याणक आशा कएल जा सकैछ । कतेक प्रगतिशील विचार अछि अहाँक !

शोभा—ककाजी, अहाँक प्रोत्साहन पाबि गद्गद् छी ।

सेकेन्ड अफसर—अहाँक हम मिथ्या प्रशंसा नहि कएल अछि ।

शोभा—(हँसैत) प्रगतिशील विचारक प्रसंग एकटा बात मोन पड़ैत अछि तँ होइत अछि जे हँसैत-हँसैत लोट-पोट भए जाइ ।

सेकेन्ड अफसर—से की ?

शोभा—तीनि गोठ छात्र हमरे सङे पढ़ैत छथि अपने दिसुका ओहि तीनू गोटेकेँ प्रगतिक परिभाषा ततेक नीक जेकाँ रटल छन्हि जे कतेको बेर कालेजक वाद-विवाद समितिमे ढाकीक ढाकी एहिपर भाषण उगलिने हेताह । मुदा ई अष्टग्रह हुनको लोकनिकेँ पछाड़ि देलकनि । जतेक गामक लोक नहि आतंकित भेल, ताहूसँ बेसी हुनका लोकनिकेँ आतंक पैसि गेलनि ।

सेकेन्ड अफसर—सै कोना ?

शोभा—(हँसैत) होस्टल छोड़ि-छाड़िकेँ सब केओ गाम भागि गेलाह जे कोनहुना तँ जान बाँचत । आ' सुनल अछि जे गाममे खोपड़ीमे सूतथि ।

सेकेन्ड अफसर—आब बूझू, जखन पढ़िओ-लिखिकेँ ज्ञानक प्रकाश नहि भेटल तँ पढ़बा-लिखबाक अर्थ की ?

[के. पी. भाक प्रवेश]

के. पी. भा—कहू मिसरजी ! कुशल ने ?

सेकेन्ड अफसर—कृपा अपने लोकनिक । किछु काल पहिने अपनेक अर्दली गेल छल ।

के. पी. भा—मिसरजी, काजक भार देखिकेँ तँ हम गुम्म छी । हमरा लोकनिकेँ एकटा अफसरक नितान्त आवश्यकता अछि । डी० एम० केँ काल्हि हम रिंग कएने छलिअनि ।

सेकेन्ड अफसर—बूझल जाओ जे काज तँ ततेक ने धकिआ गेल अछि जे कोनहुना एकरा निबटएबाक जोगाड़ लगबैये टा पड़त । हमरा तँ खटैत-खटैत पुनः परात होइत अछि ।

के. पी. भा—अहाँ लोकनि एखन युवक छी । अहाँ सभकेँ खटबैक चाही ।

शोभा—(अपना पितासँ) डैडी, कॉफी पठबा दिअ ?

के. पी. भा—जाह पठबा दैह ।

(शोभाक प्रस्थान)

सेकेन्ड अफसर—शोभा बहुत तेज छथि ।

के. पी. भा—तेज तँ अछि । मुदा तेज भेनहि की ? कोनो बरक पिता व्यवस्थासँ तँ मुक्त नहिये कए देताह ?

सेकेन्ड अफसर—शोभाक कन्यादानमे तँ अपनेके खर्च नहि होएवाक चाही । कन्याक गुणो तँ एकटा वस्तु थिकैक ।

के. पी. मा—मुदा गुणक ग्राहक कतए भेटन्ता ?

सेकेन्ड अफसर—शोभा सन गृहलक्ष्मी जनिका ओतए जएथिन्ह, तनिक तँ भाग्ये फुजि जएतनि ।

के. पी. मा—मुदा से बूझएवला के ? आइसँ किछु दिन पहिने गणानाथ एक वरक प्रसंग टेलिफोन कएने छलाह । मुदा ओ वर तँ सिक्स्थ इअरमे पढ़ैत छथि । एहि बेर कमीशनमे ओहो एकटा प्रतियोगी छथि । ज प्रतियोगितामे नोक करताह तँ हुनक माए-बाप जरसोमनो बढ़ाए देखिन ।

सेकेन्ड अफसर—हमरा तँ ओहि कथाक विषयमे नीक जेकाँ बूझल अछि । हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ओ कथा अपनेके मङ्गलनिबन्धमे सफटा जाएत । वरक नाम नरेशमोहन थिकनि ने ?

के. पी. मा—हँ, हँ, सोलह आना ठीक । अहाँ ओ वरके जनैत छिअनि ?

सेकेन्ड अफसर—हमरे सासुर लग हुनक गाम छन्हि । देखबा-सुनबामे ओ जतेक भव्य छथि, छात्रो ततबए मेधावी । शोभा आ' हुनक जोड़ी बड़ दीव होएत ।

के. पी. मा—मुदा ओ सीनियर सीविल सर्विसमे आवथि तखन ने ?

सेकेन्ड अफसर—आ' शोभा सीनियर सीविल सर्विसमे आवि जेतीह ?

के. पी. मा—निश्चित । जेँ सीनियर सर्विसमे ओ आओत तेँ चिन्ता आर बेसी बढ़ि गेल अछि । जँ ओ डिप्टी कलक्टर भए जाएत तँ कोन सब-डिप्टीसँ ओकर हाथ कोना धराए देबैक ?

सेकेन्ड अफसर—इहो कोनो बात थिकैक एस० डो० ओ० साहेब । जँ बरसँ बेसी कनिआँ आगाँ बढ़ल रहलैक, तइओ कोनो तारतम्य नहि होएवाक चाही । स्त्री-पुरुष दूनू तँ एक्के रथक दू पहिआ थिक ने ?

के. पी. भा—सैद्धान्तिक रूपेँ अहाँ जे कही, मुदा ! व्यवहारमे ई ठीक नहि होइत छैक ।

[फोनक घंटी बजैछ]

टुनटुनमा—(रिसीवर उठा कए) दलो ! हम टुनटुनमा बाजि रहल छी । की कहलिअइ शोभा दाइकेँ ।

नरेशमोहन—(फोनसँ) हँ, हँ, शोभा दाइकेँ फोन दहुन ।

शोभा—(टुनटुनमासँ) ला एम्हर । ताँ बाबूजीकेँ कॉफी द' अबहुन गऽ ।

टुनटुनमा—बेस ।

नरेश—के शोभा ?

शोभा—हँ नरेश !

नरेश—कनग्रैचुलेशनस शोभा ! अहाँक तेसर स्थान अछि ।

शोभा—(प्रसन्न भऽ) की कहल ! तेसर ?

नरेश—हँ हँ तेसर ! जल्दीसँ भोजक तैयारी करू ।

शोभा—आ' अहाँक की रहल ?

नरेश—किल्छ नहि पूछू शोभा । कोनहुना प्रतिष्ठा रहि गेल । जी-जान बाँचत तँ कहिओ ने कहिओ डिप्टी कलक्टर हैवे करब ।

शोभा—अहाँक धैर्य प्रशंसनीय अछि नरेश ! हमर डैडो सदिखन अहाँक चर्च करैत रहैत छथि । एक दिन आउ ने ।

नरेश—कोन मूह ल' कए आउ । अहाँक पिता एस. डी. ओ. आ' अहाँ स्वयं डिप्टी कलक्टर । कतहु मूहसँ अनट-बिलट बहराए गेल तँ एकटा गरीबक जिनगिए बेकार ।

शोभा—गप्पक खेती तँ अहाँ खूब जनैत छी । आव बेसी जुनि छाँटू । काल्हक साँझक प्रोग्राम रहल ।

नरेश—बेस । आ' एकटा घात बुझालिएक ।

शोभा—की ?

नरेश—मालतीकेँ फर्स्ट-क्लास फर्स्ट अएलनि अछि आ' गणानाथ एक सै एगारह भए गेलाह ।

शोभा—(आश्चर्य) एक सै एगारह ?

नरेश—एक सै एगारह, अर्थात् थर्ड क्लास ।

शोभा—एहि बेर भरिसक पुरुख लोकनिक योगे खराप छन्हि ।

नरेश—वाजि लिअ । एखन सभटा छजत ।

शोभा—आब गणानाथक की हेतनि ?

नरेश—जे गति हमर सैह ।

शोभा—(हँसैत) की कहलहुँ...हलो...हलो !! (स्वगत) भरिसक लाइने खराप भए गेलैक । नरेश चिन्तित छथि । केओ चिन्तित भए सकैछ । आव जँ हुनकासँ हमर हाथ धरोएल जाएत तँ लोक की कहतैक—बौह डिप्टी, आ' वर सब-डिप्टी ।

चारिम दृश्य

[मिसमालतीक वासा । मिसमालती आ गणानाथ दुहु गोटे अपनामे गप्प कए रहल छथि ।]

गणानाथ—डाक्टरभा हमर कैरिअर चौपट कए देलन्हि । फिफथ-पेपरमे हमरा गोल कए देल गेल ।

मिसमालती—(ठयंग्यपूर्ण हँसीसँ)—सभ पेपरमे तँ एक्के रंग नम्बर अछि । तखन एतेक सफाई देबाक कोन प्रयोजन ?

गणानाथ—मिसमालती, आश्चर्य अछि जे एखनहुँ अहाँकेँ हमर प्रतिभा पर सन्देहे अछि ।

मिसमालती—भला कहू तँ । अहाँक प्रतिभाक सोझाँमे के ठठत ?

गणानाथ—अहाँके फर्स्ट क्लास भेटल अछि ते धरती थोड़े सूक्त ?

मिसमालती—अहाँक अभिप्राय जे हम भेलहुँ आकास आ' अहाँ धरती । की करबैक लए । अहाँक कोनो न कोनो उपाए तँ भइये जाएत ।

गणानाथ—मिसमालती, अहाँक आशावादी दृष्टिकोण हमरा लेल मकरध्वजक काज करत ।

मिसमालती—देखू गणानाथजी, पहिने ग्रुप बदलि कए बढिआँ क्लास लाउ, तखनहि हमर किछु भरोस राखू ।

गणानाथ—नीक रीजल्ट संयोगक बात थिकैक । हमरा विश्वास अछि जे अहाँक सम्पर्कमे हमर नीक रीजल्ट हेवे करत ।

मिसमालती—मुदा, पहिने एकटा बात सोचि लिअ । विवाह कनिआँ-पुतड़ाक खेल नहि थिकैक, तेँ अपन माए-बापसँ परामर्श कए लिअ जे हमरासँ विवाह करबा लेल हुनक अनुमति भेटत वा नहि । अपना देशमे सभ तरहें बर कनिआँसँ जब्बर रहैत अयलैक अछि ।

गणानाथ—ई कोनो बात ने थिकैक । मिसमालती, जमाना बहुते अगाँ बढि गेलैक अछि । नारी-स्वतन्त्रता पर पुरुष समाज आव कुठारा-घात नहि कए सकैत छैक । तेँ ज अहाँ बोसे रहब आ हम उनैसे रहब तकर हमरा कोनो मीन-मेष नहि ।

[नरेशक प्रवेश]

नरेश—(गणानाथसँ) कोना बातने गणानाथ । हमरा लोकनि एक्के मांगिपर चढ़ल छी । हमरो शोभा हमरासँ बोसे छथि ।

(मिसमालतीसँ)—मिसमालती, आबहुँ गणानाथकेँ देखिअनु । ओ आरम्भहिसँ अहाँपर भरोस करैत अएलाह अछि । अहाँ छाड़ि हुनका जीवनक कोनो दोसर प्रेरणा नहि रहलनि ।

मिस मालती—(गंभीरतापूर्वक) मुदा ई विवाह सम्भव कोना अछि ?

नरेश—भने । ओहिना सम्भव अछि जेना हमरा ओ शोभाक बीच सम्भव भेल अछि । कनिआँ आ' बरमे के उन्नैस आ' के बीस, से नहि देखबाक वस्तु थीक । स्त्री आ' पुरुष दूनू जीवनरूपी गाड़ीक पहिआ छथि ।

गणानाथ—(नरेशसँ) हमहू तँ हिनका सैह कहैत छलियनि । मुदा हमर कथा तँ ई काने ने दैत छथि ।

नरेश—(गणानाथसँ) वैस तँ आव अवश्य कान देतीह । हमर ककाजी दिन तका लेने छथि । अगिला मास धरि आखरी मुद्द छैक ।

मिसमालती—(नरेशसँ) शोभा सेहो रिंग कएने छलीह जे अहाँ बहुते अगुताएल छी ।

नरेश—(मालतीसँ) ऊपरसँ जे बाजू, मुदा भितरे-भितर तँ अहाँ चाहैत होएब जे.....

मिसमालती—(हँसैत) बहत भेल । आव बन्न करू अपन मौलिक उद्भावना । आव गणानाथजीक भविष्यक प्रोग्राम बना दिअनु ।

नरेश—हिनक भविष्यक प्रोग्राम तँ बनले बनल छैन्हि । डिप-इन-एड ने नाम लिखा लेथि । अहाँ महिला कालेजमे प्रोफेसरी करब आ' ई हाइ-स्कूलमे पढ़ौताह ।

गणानाथ—(प्रसन्नपूर्वक) समस्याक समाधान तँ सुन्दर ढंगे बहार कएल अछि ।

नरेश—(गणानाथसँ) हमरो समस्याक समाधान एही प्रकारे बहरायल अछि ।

मिसमालती—(हँसैत) मुदा अहाँ तँ आइ ने कालिह डिप्टी कलक्टर हेबे करब । प्रमोसनसँ होइ वा कम्पीटिशनसँ ।

गणानाथ—(मिस मालतीसँ) आ' हमर अदृष्ट सभ दिन जरले रहल ? के जनैत अछि जे हमहू तरक्की करी :

‘त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।’

मिसमालती—(नरेशसँ) देखैत छी; अहाँक मित्र कतेक पैव आशावादी छथि ।

नरेश—(मालतीसँ) हमहू आशावादी छी । आव हमरा हुकुम दिअ ।

मिसमालती—(नरेशसँ) बाह रे हुकुम होइत छैक ? समस्याक समाधान बहार कएल अछि तँ मूहो मधुर क' लिअ ।

गणानाथ—(नरेशसँ) तारतम्यमे की छी । चलू ने ।

नरेश—(गणानाथसँ) बेस तँ हम एखन मूह मधुर क' लैत छी । सांझखन अहूँ सभकेँ मूह मधुर कर' लेल आवए पड़त ।

मिसमालती—(नरेशसँ) अहाँ ओतए वा शोभाक ओतए ?

नरेश—(मालतीसँ) आव शोभाक पिताक घर हमरे घर थिक ।

मिसमालती—से कोना ?

गणानाथ—(मालतीसँ) ठीक ओहिना, जेना आव अहाँक घर हमर घर भए गेल ।

मिसमालती—(हँसैत) बाह मिस्टर । अहाँ तँ आँगुर धरैत-धरैत आव पहुँचा धए लेल ।

[सभ केओ हँसैत छथि] †

† आकाशवाणी, पटनाक सौजन्यसँ

आइए मंगाऊ

साहित्य-समीक्षा

भाग १ एवं २

प्रथम एवं द्वितीय अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन मध्य मैथिली-साहित्यक विभिन्न अंग

कथा, कविता, नाटक, आलोचना आदि पर विशिष्ट विद्वान् द्वारा तर्कपूर्ण विवेचना

प्रत्येकक दाम : दू टाका

पता : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

भक्तजोगनी

श्रीशुभचन्द्रचौधरी

अशोकबाबू, हमरा भरोस नहि छल जे हमर चाह अहाँकेँ एतेक पसिन पड़त ?

हम एक उन्मादक प्यास लय, अपन आँखि ओकरा दिश उठाय देलियैक ।

परंच ओ बजैत गेलि—अशोकबाबू, गरम पानिसँ खोलैत चाहक केटलीक संग भरि दिन बिताय. ठंढा पानिसँ घोल एहि केटलीक सङ्ग रातुक साँय-साँयमे प्रवेश करैत छी । एहि बीच, भोरसँ साँझ धरि रंग-विरंग ग्राहक सबसँ भेट होइत अछि । कियो कारी हृदय लय तऽ कियो उजर, तऽ कियो भटरंग हृदय लय एहि चाहक कुटियामे प्रवेश करैत अछि आओर हम ओकरा सबकेँ मात्र अपन एक लक्ष्मी बुझि, प्रफुल्लित मुस्कानक संग चाहक गर्मी दैत छियैक । परञ्च हमर मुस्की ?.....

ओकरा लोक भक्तजोगनी कहैक ।

हमहुँ ओकरा एही नामसँ जनैत छियैक वा कहितो छियैक । कोना ने कहवैक—लोक जे कहैत छैक ! मोनमे तऽ आयल जे चाहवालो कहियैक परंच की ओ चाहवालो सन लगैत छलि ?...तखन ?.....

सरिपहुँ, जिम्हरहि ओ परर बढ़बैत अछि—एक अपूर्व ज्योति एक विचित्र आभा आओर एक अविस्मरणीय चेन्ह भ' जाइछ । ओही भक्तजोगनी सन जे क्षणिक ज्योति, आभा, आओर प्रकाश छितराय, देख-नाहरक हृदयमे एक प्रकारक अन्तर्द्वन्द्व मचाय दैत अछि । काश ! एहि भक्तजोगनीक प्रकाश सततक लेल रहितैक एहि चोरा-चुखीसँ !!!.....

१२७
कतेक गोटे एहि चोरा-नुक्कीमे फसला, ओम्हरयला आओर एक विचित्र
जालमे फँसि, घाढ़ नीचा खसौने अन्हरिया रातुक अन्हारघुप्प बाटपर
बिलीन भय गेलाह ।.....

से जतेक मुँह—ततेक गप्प ! कियो कहैक ओ कुलटा थीक, कियो
कहैक ओ पतिता थीक आओर कियो कहैक; 'किछु हो गाममे चाहक इज्जति
बचयबामे एक भकजोगनीये टा थीक जे चाहक दोकान खोलि, गामक
इज्जति रखने अछि ।'

सुनैत छलियैक, कहैत छल कियो जखन 'भकजोगनी हाथक चाह'
तऽ हठात् मोन चाहसँ बेशी भकजोगनीके देख लेल लबालब भरि
उठैत छल ।

से जखन गामपर आवि भकजोगनीक दोकानपर पहुँचलहुँ तऽ
ओकरा देखि टकटकी लागि गेल । स्वस्थ शरीर, गसल-गसल बाँहि, नम्रत
उरोज, जमुनियाँ रंगपर पैघ-पैघ चमकैत हरिणो सन आँखि—भूमि पड़ल
हँसि लेलक आओर कियो नहि सम्भारत तऽ तिलमिला उठल, तावतहि ओ
चोट देलक—अशोकबाबू, बइसू ने । एहन सुन्दर चाह दैत छी जे शहरोमे
नहि ओहन पीने हैब ?

नहि जानि ओकर, शब्दमे कतेक आकर्षण छलैक जे चोटहि हम बइस
रहलहुँ । ओकर केशक एक लट उड़ि गालपर चोरा-नुक्की खेलाय लगलैक ।
चाहक भाप भभकि उठलैक—श्वेताम्बु मुखारबिन्दपर पसरि गेलैक जाहिसँ
गालपर चोरा-नुक्की खेलाइत ओकर लट, ओहिमे फँसि गेलैक ।

हम ध्यानस्थ छलहुँ । सहजहि ओ बाजि पड़ल—अशोकबाबू, अहाँ
शहरूआ छी । एहि देहावनीक चाह तऽ ओतेक पसन्द नहिए पड़त परंच
एतेक प्रेमो अहाँक ओहि शहरूआ चाहमे नहिए भेटत । आओर मुस्कुराइत
ओ चाहक प्लेट हमरा हाथमे पकड़ाय देलक ।

ओकर आँगुरसँ हमर हाथ स्पर्श कऽ उठल । मोन झनझना उठल,
हाथ काँपि उठल, कप डोलि उठल—प्लेटक घेरल-वेढ़ल केन्द्रपर । कतेक
उन्माद बैक एकर स्पर्शमे ।

आओर ओकर सभ दिनुक दूसरी ग्राहक हम बनि गेलियैक । सम्भव हमही ओकर भोरुक आओर सौंभुक अन्तिम ग्राहक रहैत छलियैक । एहन ग्राहक जकरा लेल ने जाइक कंपकंपी छलैक आओर ने नमीक उष्णता ! मात्र छलैक तऽ भकजोगनी हाथक चाह, मदिरासँ भरल ओकर आँखि आओर समुद्रक गहीड़ लय पसरल ओकर हँसी ।

अशोकबाबू, हमरा भरोस नहि छल जे हमर चाह अहाँकेँ एतेक पसिन पड़त ?

हम एक उन्मादक प्यास लय, अपन आँखि ओकरा दिश उठाय देलियैक ।

परंच ओ बजैत गेलि—अशोकबाबू, गरम पानिसँ खोलैत चाहक केटलोक संग भरि दिन बिताय, ठंढा पानिसँ धोल एहि केटलोक संग रातुक साँय-साँयमे प्रवेश करैत छी । एहि बीच, भोरसँ साँझ धरि रंग-विरंगक ग्राहक सबसँ भेट होइत अछि । कियो कारी हृदय लय तऽ कियो उजर, तऽ कियो भटरंग हृदय जय एहि चाहक कुटियामे प्रवेश करैत अछि आओर हम ओकरा सबकेँ मात्र अपन एक लक्ष्मी बुझि, प्रफुल्लित मुस्कानक संग चाहक गरमी दैत छियैक । परञ्च हमर मुस्की ?.....

भकजोगनी, काल्हि हम दड़िभंगा चलि जायब । —इम बिचहिमे ओकर बात काटि देलियैक ।

हमर एहि कथा तँ ओ किछु मुर्झा सन गेलि । सम्भव हमर बीचमे टोकब ओकर प्रवचनमे खललक कारण भेल होइक वा नहि कहि जे हमर कलहुका यात्रासँ ओ आन्तरिक अवसादमे पड़ि गेलि छलि ।

एतेक जल्दी चलि जायब ? —ओ पूछलक ।

एतेक जल्दी ? पन्द्रह दिन बीत गेल ।.....

परञ्च हमरा लेल तऽ एखन जेना पन्द्रह पहरौ नहि बितल अछि ! नहि जानि अशोकबाबू किएक, अहाँसँ एतेक आत्मीयता भय गेल अछि जखन मात्र अहूँ हमर ग्राहके टा छी ।.....

बैश भकजोगनी, आव हम चलैत छी । रातुक आठ सेहो बाजि रहल छैक । काल्हि रहि गेलहुँ तऽ भोरमे चाहक चुस्की लेमय अवश्य आयब ।

हम आस लगौने रहब ।

आओर हम डेग बढ़ाय देलहुँ । अन्तर्द्वन्द्व मचि गेल हृदयमे । की हमरा ओ प्रेम करय लागलि अछि ? हम आओर ओ ?...राम ! राम !!...लोक सुनत तऽ को कहत ? ओ बियाहलि, जातिक धनुकाइन, भने अवस्था बड़ कम होइक ? छी ! छी !! नहि, हम ओकर दोकानपर नहि जायब । ओ हमरा फँसबय चाहैत अछि । वस्तुतः ओ पापिनी थीक, कुलटा थीक, नारीक एक जीबैत-जागैत अधम मूर्ति थीक !

राति करौटमे बितल तऽ भोरुक यात्रा स्थगित कय देमय पड़ल । कारण आकाश भरि आयल छल, कारी-कारी घटा लय पानिक फुहारा भ्रमकाय । कका कहि उठलाह—काल्हि चलि जायब, एहि पानिमे कोना विदा होयब ?

पानि भ्रमकि उठल—मुसलाधार वर्षा ! सूर्य नुकाय रहलाह, कारी-कारी बिजुलीक शासन भय उठल । रिमझिम - रिमझिम मोतीक दाना आकाशसँ टूटि पड़ल । सड़क क्रान्तिमान भय गेल एहि मोतीक दानासँ आच्छादित भय !

साँझ आयल । बिजुली कड़कि उठल—कड़ाक, तड़ाक ! एक भक-जोगनी देहपर आवि बइस रहल । 'भकजोगनी ।'

एक बेर फेर कारी-उज्जर प्रकाश अन्तःकरणकेँ बेधि देलक । अनायासहि पैर उठि भकजोगनीक चाहक कुटियामे आवि रुकि गेल । पट्ट बन्द—द्वार अन्हार ।

भकजोगनी ? हम सोर पाड़लियैक । एक छोट शब्द भेल आओर फटक फूजि पड़ल ।

के ? ओकर मुँहसँ मोती सन शब्द बहरेलैक ।

हम ।

अशोकबाबू ? आह ! ई अन्हरिया-बिजुती-वर्षाक साफ़ । एतेक कष्ट किएक कयलहुँ ? हमरा तऽ भेल जे अहाँ चलि गेलहुँ वा हमरासँ घृणा करय लगलहुँ अछि तेँ भोर वा बेरियोमे नहि अयलहुँ ? ओ अनुरोध कऽ उठल ।

एक कप चाह । ओकर गपकेँ हम अनुसुनैत क्रम बनौने हम किछु कहि पड़लियैक ।

चाह ? ओह ! चुलहापर तऽ पानि चुबैत छैक, खैर, हम पतझि गोइठापर बना दैत छी ।

छोड़ि दे भकजोगनी । हम ओकर हाथ पकड़ि लेलियैक । ओ किछु नहि अवरोध कयलक । बसातक एक बड़का भोंक फूजल केबाड़ीक दोग दय आबि कपैत डिवियाक लौपर प्रहार कय उठल । कपैत लौ एक बेर फेर जोरसँ काँपि शान्त भय गेल । अन्हार घुप्प ! घरमहक पइसल बसात घरक अन्हरिया देखि भागि पड़ल । केबाड़ी स्वतः लागि गेलैक ।

भकजोगनी, एक घोंट गरम चाह ? आओर हम अपन ठोर ओकर ठोरमे मिलाय देलियैक ।

क्षणहि ओ दूर हटि गेलि आओर ओ फफकि उठलि—अशोकबाबू, ग्राहकक समुद्रमे हम अहाँकेँ पूज्य आओर पवित्र मानलहुँ परञ्च अहूँ फेर वैह उतरलहुँ ? हमरा भेल जे घुरमी लागि गेल, परञ्च ओ बजैत गेलि, हम पतिता छी, हम कुलटा छी किएक तऽ हम मुखियाक बात नहि मानलियैन्हि तेँ हमर घरबलाकेँ जहल पठौलन्हि । किएक तऽ हम गामक सरदार सबहक पथगामी नहि बनलियन्हि तेँ हम व्यभिचारिणी छी ।

हमरा भेल जे कपार फाटि जायत । आओर हम विचुब्ध प्रेमी सन चिकरि उठलहुँ—एकर सबूत ?

हमर बुढ़िया सासु जे अहाँ लेल सम्भव एक कप गरम चाहक चुस्की भीतरसँ लाबि रहल अछि ।

कसि कऽ बसातक भोंका आयल । द्वार-पट स्वयं फूजि पड़ल आओर हमर मुकल घर अन्हरिया रातुक अन्हार घुप्प रस्तापर विलीन भय गेल ।

प्रो० श्रीहरिमोहनभा : मैथिलीक एक लोकप्रिय लेखक

श्रीशशिनाथचौधरी, बी. ए., बी. एड्

प्रोफेसरभाजी छथि तँ दार्शनिक—अपन कालेजमे दर्शन विभागक प्रधान—परन्तु हास्य-रसक सेहो प्रधान लेखक छथि । श्रीहरिमोहनबाबूक नाम लेत हमरा ‘लाफिंग फिलोसफर’ क नाम स्मरण भइ जाइत अछि जकरा फाँसी सजाए भेल छलैक । फाँसीक तख्तीपर ओ हँसितहिँ छल । जाहि प्रकारेँ कोनो-कोनो व्यक्ति स्वभावतः हास्यप्रिय लिखबामे वा बजवामे होइत छथि, ताही प्रकारेँ मैथिल-जाति—मिथिला-निवासी—मात्र हास्यप्रिय होइत छथि । गोनूभाक वा भानाभाक सदृश एखनो बहुत व्यक्ति छथि । राज-दरबारमे मैथिल लोकनि, प्रवेश करबामे बड़ पटु होइत छथि । विद्वत्ताक अतिरिक्तो हास्यप्रियता हिनक एक स्वाभाविक गुण छैन्ह ।

१९५३ ई० मे कोनो कार्यवश हम पटना गेल छलहुँ । पुस्तक-भण्डारक स्वामी ‘मास्टरसाहेब’सँ वार्त्तालाप करैत छलहुँ । एतवहिमे एक प्रौढ़ नव-युवक ऐलाह । साधारणवेश केवल एक कुर्ता, ओखिपर चश्मा आ मस्तक पर किछु नहि । मुखक मुद्रा किछु गम्भीरेसन । हुनकासँ मास्टरसाहेब पुछलथिन्ह—की हो, हिनका चिन्हैत छहुन ? ओ उत्तर देलथिन्ह—नहि । मास्टरसाहेब कहलथिन्ह—ई छथि भगवान् बुद्धके लेखक शशिनाथजी । पश्चात् मास्टरसाहेब हमरोसँ ताही प्रकारेँ प्रश्न कएलन्हि । हम उत्तर देलि-ऐन्ह—हँ, हम हिनका चिन्हैत छियैन्ह—ई छथि हरिमोहनबाबू ।

हरिमोहनबाबू विद्यार्थी अवस्थेसँ मास्टरसाहेबक सम्पर्कमे छलाह ई हमरा ज्ञात छल । हमरा ई स्मरण होइछ जे एक बेर हरिमोहनबाबू हमरा घरोपर आएल छलाह जखन ओ प्रायः कालेजमे पढ़ितहिँ छलाह ।

हमर जेठ भाइ श्रीमुक्तिनाथचोधरीजीसँ भेंटक हेतु आएल छलाह । हुनक पिता पण्डितजनार्दनभा 'जनसीदन' जखन 'मिथिला-मिहिरक' सम्पादक छलाह तखनहिसँ हरिमोहनबाबूक परिचय भेटल छल । एक बेर डा० सुधाकरभासँ भेंट करऽ पटना गेल छलहुँ तँ हरिमोहनबाबूसँ भेंट भेल छल तखन ओ बो. एन. कालेजकेँ छोड़ि पटना कालेजमे आवि गेल छलाह ।

ई केवल दर्शन - शास्त्रक अध्यापक नहि छथि, मैथिली - साहित्यक एक उच्च कोटिक लेखक एवं लोकप्रिय पद्यकारो छथि । एक बेर 'सुमन'जीक डेरापर किछु साहित्यिक एकत्र भेल छलाह । 'चाणक्य'क चर्चा चलल । राजपण्डितश्रीबलदेवमिश्र लदारिक † चाणकाडीहक उल्लेख करैत बजलाह जँ चाणक्यो मैथिले छलाह; हुनक निवास-स्थान लदारी ग्राम छलैन्ह जे दरभंगासँ ६-७ मील उत्तर हाजीपुरक समीप अछि । एहू वार्त्तालापमे श्रीहरिमोहनबाबू सक्रिय भाग नेने छलाह एवं अनेक युक्तिकेँ उपस्थित करैत हुनक मैथिलत्वकेँ प्रमाणित कएने छलाह ।

जखन हिनक लिखल 'कन्यादान' प्रकाशित भेल तँ एहि ग्रन्थक समालोचना लोखि हम 'मिहिर'मे पठौने छलहुँ एवं ओ लेख यथा-समय प्रकाशितो भेल छल ।

श्री 'अमर' जीक कृपासँ 'वैदेही' १९५३ ई० क विशेषाङ्क तथा एकर पूर्ण फाइल हमरा प्राप्त भेल अछि । प्रायः प्रत्येक अङ्कमे हिनक लेख देखि पड़ल । किछु व्यक्ति एहनो देखवामे अवैछ जे दहिन् हाथ एवं वामहाथ, दून् हाँथसँ समान रूपे लीखि सकैछ । ताही प्रकारें हरिमोहनबाबू गद्य-पद्य दूहुँक रचना समानरूपे करैत छथि । जतवे आनन्द 'खट्टरककाक तरंग'मे भेटैछ ततवे हुनक कविता 'आगि'मे :

रानिमे हम स्वप्न देखल, आगि लागल घर जरैये ।

चारसभ पुरना धधकि कय, जोरसँ 'धू-धू' करैये ॥

† लदारी वा लदारी 'नन्दारि' क अपभ्रंश बूझक चाही । चाणक्य यथार्थतः नन्दारि छलाह ।

जरि रहल अछि सन-सना कय, पाँजि केऽ पोथाक ढेरी ।
राख भय सिद्धाभन् सभ पछवाक लहरामे उड़ैये ॥

एहिमे 'पछवा' शब्द बड़ मार्मिक अछि । पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावसँ हमर अपन प्राचीन सभ्यताक ध्वंस भऽ रहल अछि ई कविक अभिप्राय छैन्ह । पुनः ओ भागौ कहैत छथि :

पाग चपकनि मिजई सभ छार जरिकय भयरहल अछि,
युगयुगान्तर केर पदी आइ गदामे मिलैये ।
छोट पैघक भेद—सूचक शृङ्खला - सीढ़ी टुटैये ॥
भीत केऽ जे नीव छल हरिसिंह देवक से ढहैये ॥

कवितामे कवितेक स्वाभाविकता अछि, कतवा सरलता एवं सरसता अछि से ककरो बुझएवाक कार्य नहि । यदि किच्छु आपत्ति अछि तँ 'राख' तथा 'नीव' शब्द पर । परन्तु बृहत्तर मिथिलाक ध्यानमे रखैत विशेषतः कवितामे कोनो विशेष रूपेँ आपत्तिजनक नहि ।

परन्तु एहि भयङ्कर अगिलगीसँ कोनो विशेष क्षति नहि । कारण 'पुरान घर खसे तँ नवघर उठे' ई प्रसिद्ध लोकोक्ति अछि । अतएव कविजी कहैत छथि:

होलिका केऽ एहि दहनमे भस्म सब किच्छु भय रहल अछि
किन्तु ओहि चिताक उपर, एक नवका घर उठैये ।

दिनके एहि कविताकेँ पढ़ि सहसा कविवर सीतारामभाजीक स्मरण होइछ जिनक सरल शैली सभक हृदयकेँ अपना दिश आकृष्ट करैछ । †

श्रीहरिमोहनबाबू 'गरिबनीक बरहमासा' जे 'वैदेही'क सितम्बर १९५३ ई० मे प्रकाशित भेल अछि । गरीबके तँ बारहो मास दुःखे दुःख रहैत छैक । जेठमे 'आगि बरसैत' छैक, लोक 'उसिना रहल' अछि । आषाढ़मे वर्षासँ जारन भिजैत छैक; काँच जारन पजरत कोना; जौ पजरबो करत तँ 'धुआँक द्वारे आँखि फुटैत छैक' साओनक कथे की :

† देखू: वैदेही अक्टूबर, १९५३ ई०

सावन हे सखि बुंद बरिसय, चुबि रहल शनधार यो ।
 एकोटा घर नहि छैक निचू, सुतक नहि परकार यो ॥
 भादव हे सखि बाढ़ि आएल, डुबल खेत पथार यो ।
 साँप सह-सह कय रहल अछि, कोना कऽ हैव बहार यो ॥

एहिमे गरुडक यथार्थ स्थितिक तथा ओकर कष्टक केहन स्पष्ट अछि ।
 साँपक 'सह-सह' करव, शरीरकेँ रोमाञ्चित करैत । हँ, 'सावन' शब्द
 अखरवाला अछि 'साओन' रहने उत्तम होइत ।

'श्रीहरिमोहनबाबू मैथिली साहित्यिक अद्वितीय हास्य - रस लेखक
 छथि' एहिमे सत-विभिन्नता नहि अछि । दिनक लिखल 'संगठनक समस्या'
 एक युक्तिपूर्ण लेख अछि । 'संगठन' शब्दक ऊपर एहन तर्क-वितर्क उपस्थित
 कएल गेल अछि; सेहो हास्यपूर्ण शैलीमे जकर वर्णन करव सम्भव नहि ।
 ई लेख पढ़ले उत्तर यथार्थ आनन्द प्राप्त होएब सम्भव । व्याकरणाचार्य
 जखन 'संगठन' शब्दकेँ अशुद्ध वा व्याकरणसँ एकर सिद्ध असम्भव कह-
 लन्हि तँ 'संगठन'क स्थानमे 'संघटन' राखब स्वीकार कएल गेल । कारण
 ई शब्द सभ उपसर्गपूर्वक 'घट' धातुमे 'ल्युट' प्रत्यय लगलासँ बनैछ । परन्तु
 ई 'संघटन' कर्मकाण्डी काँ पसिन्द नहि । एहिमे तँ सभक भेटवाक भाव
 सन्निहित छैक । तँ संघटनसँ 'संव' मात्र रहि गेल । परन्तु वैदिकजीक
 सन्तुष्टिक हेतु 'संव'क स्थानमे 'समवाय' राखल गेल । पुनः समवायकेँ
 काटि 'संयोग' बनल ।

एही प्रकारें प्रो० झाजीक लिखल 'मर्यादा भंग' शीर्षक लेख पढ़वाक
 योग्य अछि जाहिमे एक दिश तँ पण्डितजी प्राचीन प्रथाक अन्धभक्त छथि
 जे अपन पण्डिताइनपर अतिशय क्रोधित एहि कारण भऽ गेलाह जे
 पण्डिताइनजीक पुतोहु पाहुन (चौधरोजी)क सोझा भेलथिन्ह । लेखक
 बड़े रोचकपूर्ण रीतिसँ प्राचीनताक त्रुटिकें प्रदर्शन कएने छथि । पण्डितजी
 अपन पुतोहुकेँ 'भनकाहि' बना अपन घरक मर्यादाकेँ नष्ट होएबासँ रक्षा
 कएलन्हि । एही प्रकारे हास्य-रससँ ओत-प्रोत दिनक लिखल अनेक निबन्ध
 अछि । एहि सभमे 'तीर्थ-यात्रा' तँ एहन शैलीमे ई लिखलनि अछि जे
 हँसैत - हँसैत लोक लोट - पोढ़ भऽ जाए ।

कोनो 'अप-टू-डेट' परिवारक पिकनिक देखि लेखककाँ इच्छा भेलैन्ह जे हमहूँ अपना गामसँ किछु स्त्री-पुरुषकेँ संग लऽ यात्रा करी । बिचारकेँ ई कार्यरूपमे परिणत कएलनि । एहि 'यात्रा'क अपूर्व वर्णन पढ़ितहि बनैछ ई यात्रा छल जगन्नाथपुरीक जाहिमे १२-१४ लोक स्त्री-पुरुष मिला कऽ पार्टी तैयार भेल । अपन-अपन खैवा-पोबाक वस्तु लऽ सभ केओ बिदा भेलाह । 'प्रथमप्रासे मत्तिकापातः' भेलैन्ह । सिमरियाघाटमे किछु लोकनि रहि गेलथिन्ह शेष जहाजपर पार भेलथिन्ह । पाछाँ ई लोकनि सिमरिया पार भेलाह । परस्पर दोषारोपण भेल । बड़की बाचीक कण्ठमे रसगुल्ला अटक गेलैन्ह जाहिसँ ओ वेहोश भऽ गेलीह । ओम्हर गूजर बाचाक पेट खराप भऽ गेलैन्ह । गाड़ी चलल तँ चायबलाक गिलास फुटलैक, दोसर मोसाफिरसँ कलह प्रारम्भ भेल आदि-आदि एहन सुन्दर रूपेँ लिखल गेल अछि जे लेखकेँ प्रारम्भ कएला उत्तर विना समाप्त कएने कोनो उपाय नहि ।

प्रोफेसरभाजी छथि तँ दार्शनिक—अपन कालेजमे दर्शन विभागक प्रधान—परन्तु हास्य-रसक सेहो प्रधान लेखक छथि । श्रीहरिमोहनबाबूक नाम लैत हमरा 'लाफिंग फिलोसफर'क नाम स्मरण भऽ जाइत अछि जकरा फाँसीक सजाए भेल छलैक । फाँसीक तख्तोपर ओ हँसितहिँ छल । जाहि प्रकारेँ कोनो-कोनो व्यक्ति स्वभावतः हास्यप्रिय लिखवामे वा बजवामे होइत छथि, ताही प्रकारेँ मैथिल जाति—मिथिला-निवासी—मात्र हास्य-प्रिय होइत छथि । गोनूभा वा भानाभाक सटा एखनो बहुत व्यक्ति छथि । राज-दरवारमे मैथिल लोकनि, प्रवेश करवामे बड़ पटु होइत छथि । विद्वत्ताक अतिरिक्तो हास्य-प्रियता हिनक एक स्वाभाविक गुण छैन्ह ।

हम जाहि लेख वा कविताक चर्चा कएल अछि तकरा श्रीहरिमोहन-बाबू दस वर्ष पूर्व लिखने छथि । एहि दस वर्षक अभ्यन्तर तँ हुनक विचार, शैली आओर परिमार्जित भऽ गेल होइतैन्ह ।

मिथिलाभाषाक तँ इनल-गिनल समाचारपत्र अछि । हमर प्रार्थना प्रोफेसरभाजीसँ ई अछि जे बालोपयोगी कविता जोखि बाल-साहित्यक भण्डारक पूर्ति करथि । कारण ई जे मैथिलीमे बाल-साहित्यक निर्माण भेले नहि अछि । बालोपयोगी ग्रन्थक अभावसँ प्राथमिक पाठशालामे मैथिलीक प्रचार कम अछि, यद्यपि आनो-आनो कारण मैथिलीक प्रचारक बाधा स्वरूप अछि । यावत पर्यन्त मैथिलीक पाठकक संख्यामे वृद्धि नहि होएत तावत धरि प्रकाशक तथा लेखक लोकनि काँ प्रोत्साहन नहि भेटतैन्ह । ● ●

बड़क धर, खजूड़क भंड

श्रीशिवशंकरमिश्र 'नृसिंह'

चिमनी सभ धुआइत रहल, इंजिन सभ चलैत रहल, बिजली बहैत रहल; घसाइत, घर-घराइत मशीन सभमे सभक आशा, सभक मेहनति, सभक अनुभव, सभक योग्यता, सभक श्रम आ सभ किछु पिसाइत रहल आ मौनव्रती सभ किछु देखनिहार बड़क धरपर खजूड़क भंडर हहाइत रहल ।

बड़का बम्मा बजलैक कि पाँच हजार मजदूर, बाबू आओर इंजीनियरक पाली टुन-टुन-टुन-टुन, टन - टन - टन - टन, भों...भों...करैत पैदल रिक्शा, साइकिल आ कारपर कारखानामे पहुँचऽ लागल आओर दोसर पाँच हजारक पाली आठ घंटाक कड़ाचूड़ ड्यूटीसँ थाकल अपन-अपन काज दोसरकेँ सोपि-सोपि डेरा दिसकऽ बिदा भऽ गेल । मेन रोड, वन वे ट्रैफिक, फुट-पाथ आओर उच्चपथपर फेर थोड़ेक कालक लेल भीड़ भऽ गेलैक । इंजिन सभ चलैत रहल, चिमनी धुआइत रहल, बिजली बहैत रहल आ मशीन सभ घसाइत रहल ।

मेन गेटसँ थोड़ेक दूर चललापर सड़कक कातमे एक दू पाँजसँ बेशी मोट बुढ़ा बड़क गाछ छैक-कहियासँ से प्रायः ककरो ने बुझल छैक किन्तु जहियासँ एफ. सी. फेक्ट्री फुजलैक ताहियासँ आइधरि ओहिमे किछु परिवर्तन नहि भेलैक अछि । दू मढ़ ऊपर जाकऽ बड़ ठुठ भऽ गेल छैक, बीस-पच्चीस टा नमहर-नमहर हारियर पहुरी सभ चारु महर पसरल छैक आओर ओकरा ऊपरमे एक गोठ विशाल, नाम खजूड़क गाछ छैक जे सभ साल फड़ैत छैक । कारखानाक एक गोठ बूढ़ मजदूर—जेपराट पाँड़ाक कथन छैक जे कहियो ई बड़ विशाल बड़क गाछ छल । देश-देशक चिड़ै-चुनमुनी एहिपर रातिमे आबि कऽ विश्राम करैत छलैक । एक बेर बिजली खसलैक आ सरसराकऽ गाछे दऽने धरती पैसि गेलैक । ताहियासँ आइधरि गाछ ठुठ छैक आओर कोनो पच्ची कहियो ओहिपर खजूड़ खाकऽ जे बीट देलकैक से एहन विशाल गाछ भऽ गेलैक, बड़ोक गाछसँ सामर्थ्यशाली । जखन-जखन जन-समुदाय ओतऽ दऽ कऽ चलैत रहैत अछि कम-सँ-कम एको बेर सभक नजरि ओहि ओहिपर अवश्य चर्चा चलैत छैक ।

एक बेर साउथ-वेस्ट कालोनीमे सप्लाई आफ भंड गेलैक कि समस्त धानहार गुब्ज । खाली दूरपर कारखानामे तरेगण जकाँ टिम = टिमाइत बिजली बत्ती सभ, चिमनी सभमे जरैत गैस सभक रंग-विरंगक प्रकाश आ दूसर फीट ऊपरमे जरैत 'स्काइ-लाइट'क संग उज्जर दब-दब, कारी भुजुंग, पिरौछ आ ब्राउन-ललौन धूआँ सभ देखाइ पड़ैक ।

बिजलोक यह बड़का ऐब—कैरम, चाइनीज चेकर, टेबुल टेनिस, लूडो, सतरंज खेलाइत मजदूर क्लब-हाल महक युवक-युवती टिप्पणी कयलक—पैट्रोमैक्समे ई तँ नहि रहि सकैत छैक जे अपने इच्छे चलथ मुदा बिजलीमे तँ हमरा सभक कोनो सक्के नहि । पावर हाउसक इंजीनियर प्रायः सिनेमा चल गेलैक अछि ।

एह हरान छी डी. वी. सी. क एहन सप्लाईसँ—अपना-अपना बाल-बच्चाकेँ डेरामे पढ़वैत पुरनका नोकरिहा सभ अकच्छ भंड कऽ बाजल—दिनमे दू खेर पंखा आ रातिमे कम - सँ - कम एक खेप बल्ब मिफ्यवेटा-करत—जेना कोनो श्राप लागल होइक ।

किए ने हेतैक ? ई सभ टा पापक लक्षण थिकैक—इंटरवलमे संगी सभक संग ओवर त्रिजपर बैसल फोरमैन होटल सिंघ नमहर, उज्जर, मोट-गर मौछकेँ सरियैलक आ बाजल—'एहन पापी डाइरेक्टर । आखिर के बना देलकैक ? जेना एम. एल. ए; एम. पी.क चुनाव होइत छैक, मंत्री-उपमंत्रीमे चुनाव होइत छैक, कारखानोक पैघ - पैघ पदाधिकारीक चुनाव मजदूर मतसँ होमक चाही । अहा ! शुरू - शुरूमे डाक्टर जे. के. सिन्हा एकर डाइरेक्टर भेल रहथि ओ ओहि पदक योग्यो छलाह आ तदनुसार काजो कऽ कऽ गेलाह । हुनका जमानामे कैपेसीटोसँ कम कहियो उत्पादन नहि भेलैक आ एखन जकाँ आठ सय, साढ़े आठ सय टनसँ बढ़ैत - बढ़ैत जेना मशीनमे जाम लागि जाइत छैक ।'

—आ हुनका जमानामे सुनैत छिएक जे ककरो प्रमोशन कहियो रुकलैक नहि—सेताप पनिकर गपकेँ आगाँ ससारलनि ।

तकर कारण लोककेँ एखन कोना बुझबामे ओतैक—वर्कशाप इन्स्ट्रक्टर सुन्दर सोरका अपन असहमति देखौलनि—डाक्टर गोलवलकर

सेहो तँ सभकेँ भीकिये रहल छथिन, तखन येह ने जे एक्के बेर सभकेँ प्रमोशन नहि भेट जाइत छेक से तँ हुनका अपनो परिवार छनि—बाल-बच्चा छनि, स्त्री छनि आ सरक गुजर नोकरियेसँ होइत छनि। हुनका अपनो नोकरीक ने फेर डऽर छनि। तँ स्ट्रिकट बनल छथि, बटरिंगपर विशेष ध्यान नहि दैत छथिन।

हँ, घंट स्ट्रिक छथि ! —भा पार्टी नम्बर तीनक सेक्रेटरी डी. सी. फ्ला तमाकू निकाललनि आओर आर किछु कहऽ चाहिते छलाह कि होटल सिंग खखसि देलकैक। सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल आ असिस्टेंट पावर प्लांट मैनेजर इंजीनियर पी. एम. गौड़ मुँहमे चुर्रट धरौने चल गेलाह।

सेक्रेटरी भा तमाकू ठोर तरकऽ दबलनि आ बजलाह—सभ टो दक्षिण भारतीयकेँ आनि - आनि भरि देलथिन अछि आ स्ट्रिकट छथि ! अनुभवी, योग्य आओर सीनियर सभ भाम गूड़ि रहल छथि। जहियासँ डाक्टर गोलवलकर डाइरेक्टर भेलाह अछि कारखानामे सभ वाद—प्रान्तवाद भाषावाद, जातिवाद आ की - की वादक ने प्रश्रय भऽ गेल अछि।

—प्रथम मैनेजिंग डाइरेक्टर डाक्टर जे. के. सिन्हाक समयमे सभ साल बीस - पचीस इंजीनियरकेँ विदेश जयबाक चांस भेटैत छलैक। स सभ की भेलैक ? येह थिकैक स्ट्रिकटनेस !

ठाम - ठीम लोक स्थगित भऽ अहिना गप पसारनहि छल कि धर दऽ एक्के बेर सौंसे साउथ - वेस्ट कालोनी जगमगा उठलैक। भविष्यक आशामे सभ कार्यरत भऽ गेल। प्रकाशक तुरन्ते बाद क्लबक रेडियो समाचार देमऽ लगलैक। रेडियोक चारू कात लोग घर लागि गेल। समाचार अयलैक— 'बोमदिलासे चोनियोने अपनी सेना हटा ली है वहाँपर फिर तिरंगा झंडा बड़े हर्षोल्लासमे फहराया गया है ...। जबतक चीनियो को खदेड़ नहीं दिया जाता भारत कश्मीर-समस्या पर कभी विचार नहीं करेगा ...बी. बी. सी. से मांग की गयी है कि सिंगापुर से भारत को ब्राडकास्ट करनेकी सुविधा दे...। यूनियन पब्लिक सर्विस कमिशनमे डाक्टर पी. टी. नागराजन् को एफ. सी. फ़ैक्ट्रीका मैनेजिंग डाइरेक्टर नियुक्त किया है... ..।' आ प्रकाशक गतिसँ

सम्पूर्ण कालोनीक गली-कूची, कोन-सान्निहमे ई समाचार पसरि गेलैक ।
हर्ष आओर उल्लास । उल्लास आओर हर्षक सीमा नहि रहलैक ।
जेना कि सभकेँ आइए प्रमोशन भेटऽवला होइक — जेना सभकेँ ऐखन
बोनस भेटल होइक ।

—नागराजन् ?

—हँ, डाक्टर पी. टी. नागराजन् । ऐखन धरि अनमैरेड आजन्म
ब्रह्मचारी ! सुन्ना आदमी, कोनो फैंट-फांट नहि, खांटी—एकदम खांटी !
मूर्त मानव ! एहन जिनका लोक-लोकमे नहि लोक-लोकक कार्यमे अन्तर
बुझल छनि जे सम्पूर्ण मजदूर-समाजकेँ अपन परिवार बुझताह !

—वास्तवमे जकरा अपना परिवार रहैत छक ओकर स्नेह बटा
जात छैक—किछु धीया-पूताकेँ आओर बाँचल-खूचल ओकर सहयोगीकेँ,
ओकर मजदूरकेँ भेटैत छैक ।

—डाक्टर नागराजन् ! अहा ! पी. टी, मर्सी, उदारता सभक
खानि !

—भगवान हमरा सभक पुकार सुनलनि । आव हमरो सभक भाग्य
चमकत आ दिन-दुनियाँ बदलत ।

चारु महर हर्ष आओर उल्लासक लहरि बहऽ लगलैक—सभ खुश,
सभक परिवार खुश ! जँ - जँ हुनकर पद-ग्रहणक दिन लग आवऽ लगलनि
तँ - तँ हुनका लेल निर्मित स्वागत-समितिक काज आगे त्वरित भऽ गेलैक ।
सारा कालोनी ढोरल-पोतल गेल । गाछ - बिरीछ, बान्ह - सड़क सभ रंगल
सजाओल गेल, कारखाना झाड़ल - पोछल गेल । अनेको ठाम तोरण द्वार
बना - बना वेलकम, स्वागतम्, डाक्टर पी. टी. नागराजन्केँ स्वागत हो
आदि लिखल गेल ।

हुनकर पद - ग्रहणक दिन छल कि सभक लेल एक गोट पावनि !
घरे - घर फीस्ट—मुर्ग रोस्ट, सलाद, एग करी मधुर । सीटी-कल्याणगृहक
मैदानमे सभाक आयोजन छल ।

कयल गेल स्वागतक उत्तर देमऽ लेल डा. नागराजन् जैक. ने शिकागो रेडियो माइककेँ पकड़लनि कि रिपोर्टर्स आ सभ आदमीक द्वारा फोटो खिचैत - खिचैत फलैस लाइटसँ मंघ चम - चमा उठल । कतेक तरहक माला पहिराओल गेल आओर कतेक मुडमे स्नैय लेल गेल ! तुरन्ते फेर अपार भीड़ शान्त-एकदम शान्त ! पिनड्रौप साइलेंस !

—हमरा जे अहाँ लोकनि स्वागत कयलहुँ अछि ओकरा हम कहियो बिसरि नहि सकैत हो किन्तु आवश्यकता अछि जे जाहि काज लेल हम एतऽ नियुक्त कयल गेलहुँ अछि तकरा सभगोटे मिलि कऽ निभाबी । जाधरि अपने लोकनिक पूर्ण सहयोग नहि भेटत कारखानाक पूर्ण उत्पादन ठमकले रहि जायत । हमरा दोसर कोनो भङ्कट नहि अछि ने परिवार अछि ने कोनो माया । हम अपन सम्पूर्ण समय एहीमे लगायब । देशभक्त ओतबैक गोटे नहि जे लोकनि सीमापर एखन क्रूर चीनीसँ लड़ि रहल अछि । जँ क्यो गृहस्थ छी आ अपना खेतमे दू मनक बदला तीन मन उपजाबैत छी, जे क्यौ कारखानाक मजदूर छी आओर श्रम कऽ कऽ अपना मशीनक उत्पादन बढ़बैत छी तँ ओहो लोकनि सीमापर लड़निहार जवानसँ कम देशभक्त नहि छी तँ किए देशमे खतराक समयमे, संकटकालिक अवस्थामे अहाँ उत्पादन कऽ देशक आर्थिक शक्तिकेँ बढ़बैत छी जे कोनो देशक प्रायः सभसँ प्रबल शक्ति थिक । उत्पादन बढ़लासँ समानक भाव किन्तु ने बढ़त...। आशा अछि अहाँक पूर्ण शक्ति हमरा सहयोग दऽ सकत.. ।

कि एक्के बेर सम्पूर्ण सभा थोपड़ीक शब्दसँ गूँजि उठल ।

—डिजर्विंग फीगर्स विल ग्रातवेज गेट दि राइट पोस्ट एण्ड पेज—
नागराजन् जोरसँ सजोश भाषण कंटिन्यू कयलनि—हमरा लगमे ककरहु प्रमोशन रुकल नहि रहत । पारिश्रमिकसँ कम ककरहु वेतन नहि भेटत । उचित बोनस भेटत । हम कोनो तरहक इज्जक—कस्टिज्ज, ब्रांचिज्ज, प्रोविसि-यलिज्ज नहि जनैत छी । अहाँक काजक इंप्रेशन हमरा सलामी ठोकलासँ नहि, हमरा नीक - नीक चीज प्रजेंट कयलासँ नहि, हमर पैरवी कयलासँ नहि वरन् अहाँक काज देखलासँ होयत । कारखाना अहाँ सभक अपन कारखाना छी तेँ अहाँ लोकनि एकरा उत्पादनमे अपन सत्यश्रम लगाउ, ओहीमे

हमरा हर्ष, अहाँकेँ हर्ष आओर अहाँकेँ देशकेँ सरकारकेँ हर्ष हेतैक आओर देशकेँ संकटकालमे बल भेटतैक.....।

कारखानामे खटानहार तीनू पाली—पन्द्रहो हजार बकैस कारखानाकेँ अपन घर लूकऽ लागल । सभ जी-तोड़ परिश्रम कऽ कऽ देशकेँ आर्थिक उन्नतिमे हाथ बटौलक । कारखानाक डिजाइनिंग कंपेसिटी एक हजार टन प्रतिदिन छैक जे उत्पादन आइ धरि नहि भऽ सकल छलैक । दस बपक लगातार काज लेलाक कारणेँ मशीन सभक काय-चमत्ता (पर्सिपेंसी) सेहो घटि गेल छलैक किन्तु पन्द्रह हजार मजदूरक पसीना पाबि मशीन सभमे जान आबि गेलैक । लुग्गा नहि पड़लैक जेना किछुओ डेप्रिसिएशन भेल होइक । उत्पादन बढ़ऽ लगलैक—बढ़ल गेलैक, बढ़ल गेलैक आ बढ़त-बढ़ैत बारह सय टन प्रतिदिनपर चल गेलैक ।

अखबार सभमे मोटका-मोटका अक्षरमे निकललैक—ग्राडेशन आफ दि एफ. सी. फैक्ट्री इंक्रिज्ड टू टवेल्व हंड्रेड टन्स पर डे, डा. पी. टी. नागराजन् इज एन एबुल डाइरेक्टर...। लोकसभामे डा० नागराजन्क कार्यदक्षताक प्रशंसा कयल गेलनि ।

लोक सभ अपन-अपन प्रमोशनक आशा कयलक । हाट-बजार, चौक-फुटपाथ, सभ ठाम डा० नागराजन्क प्रशंसा । सरकार हिनका तखन पद्म-श्रीक उपाधिसँ विभूषित कयलनि ।

कालोनीमे क्वार्टरे-क्वार्टरे चर्चा होमऽ लगलैक जे असिस्टेन्ट पावर प्लान्ट्स मैनेजरक बदली किए भऽ रहल छनि । जहियासँ कारखाना बनलैक वेचारे इंजीनियर गौड़ दिन-राति इमानदारीसँ काज करैत रहलाह किन्तु आखिर बात की थिकैक ।

—अपने दोसर ठाम नीक पद पाबि कऽ जा रहल हेताह । —क्यो बाजल ।

—सभ टा मूठ-मूठ थिकैक । भरि दिनमे तँ एहन-एहन कतेक बुलेटिन निकलैत छैक आ बहि जाइत छैक । एहि सभपर जँ विश्वास करऽ लाग्य तँ एक दिन एहिठाम रहब कठिन भऽ जयतैक । —म्हा पार्टी नम्बर दूक कार्यकर्ता बजलाह ।

आर. टी. आओर ई. एफ. स्टाफ काटैर सगिसे सवसँ सुअरि बेटी छलनि इल्लीनियर सोमीर प्रोकाशके—रेणु । चहुँत अठारहमे रेणु मजदूर युनियन कालेजसँ आइ. एस. सी. कयन छलि । डाक्टररी पढ़वाक नीव आभजाया छलैक । एखन रेणु एम. बी. बी. एस. क पढ़ाइक अन्त करऽ करऽ पर छलि । गौर वगुं, रंगल ठोर आ आन्हर जयानी ! प्रवेशिके धरि किए इन्टरमीजिएट धरि हरदम शक्यारे पहिरेन छलि रेणु । पुष्ट आओर पूरल गोल-गोल गाल, गोर शरीरपर कासी कपड़ाक शक्यार, डीप ब्लैक फ्रेमक गगलस, एक हाथमे किछु किताब आओर दोसर हाथमे छाना लऽ कऽ जखन कनास करऽ विदा होइत छलि तँ ने जानि अनेरे किए सभक नजरि सकपर खिचा जाइत छलैक । जँ-जँ समय बितैत गेलैक, अवस्था चहुँत गेलैक, तँ-तँ रेणु मुखर्जाक भव्यता आरो निरखैत गेलैक । लाल इमलीक स्कर्टपर करिष्ठा कमीज पहीरि जखन साइकिल हँकैत छलि तँ एकाएक राम्हा मूमि उठैत छलैक ।

रेणु—सोमार प्रोकाशक दुलारु बेटी सभकेँ नीके लगैक । दू बेर ओकर अल्हड़ चालि देखवाक आओर पेंटल वा डिडियायल किन्तु मधुर बोल मुनवाक सभकेँ अभिलाषा होइक—चाहे ओ क्यो होअय—कारखानाक नवयुवक कार्यकर्ता वा नजदीकेक कालेजक छात्र । तँ सौँफू पहर कऽ एम्हरका सड़कपर चलनिहारक जेना धरोहि लागि जाइक । बैडमिंटन खेलाइत-खेलाइत, उछलैत-कूदैत जखन ओ थाकि जाय तँ रैकेट सम्हारय आ छतपर आबि कऽ घँसि जाय । तखनसँ जाधरि अन्हार नहि भऽ जाइक लोकक आँखिक उत्तर देव आओर ओकरा स्वीकार करव । सभ दिनका एतबैक प्रोग्राम, ने तँ दोसर दिनसँ ओहि मुहल्लामे घूमनिहारक संख्या घटऽ लगितैक ।

किछुओ मास ने बीतल हेतैक कि इल्लीनियर सोमीर प्रकाशकेँ असिस्टेन्ट पावर प्लांट मैनेजरपर प्रमोशन भेटि गेलनि । लोककेँ ने बेशी हर्ष भेलैक ने विषाद मुदा आश्चर्य अवश्य किए तँ जँ ई सुनि कऽ खुशी होइक जे रुकल प्रमोशन सभ फेर भेटऽ लगलैक तँ ई सुनि कऽ दुखी होइक जे इल्लीनियर पी. एम. गौड़ सेहो तँ योग्य व्यक्ति छलाह आ हुनका पढ्यन्त्रक द्वारे कारखाना छोड़ि जाय पड़ि रहल छनि ।

रेणु —सोमीर प्रोकाश बेटीके आह्लाद भरल स्वरमे बजौलनि—
‘एधर एसो’ ।

—‘आशते छी बाबूजो’ —रेणु हव्वर-हव्वर स्कर्टक वेल्ड कसलक,
चारु कात ताकि हेरि कऽ सभ फुजलाहा बटन भट्-भट् वऽ लगा लेलक,
केश सरियोक, गगलस लगौलक आ दौड़ि कऽ आराम कुर्सीपर गार्डेनमे
बैसल बापक देहमे ओठडि कऽ सटि ठाढ़ि भऽ गेलि ।

—दुइ जने पुनः एके साथे नागराजने क्वार्टर जाइबो, तुमि कपड़ा
पढ़े साइथो (दूनू गोटे आइयो एक बेर नागराजन्क डेरा चलब, तों कपड़ा-
लत्ता पहीरने आवह) ।

रेणु दौड़लि-दौड़लि ड्राइङ्ग-रूम गेलि आ तुरन्ते रंगि-दीपि, पहीरि-
ओढ़ि कऽ तैयार । दूनू गोटे कारमे बैसलाह आओर डा० नागराजन्क
क्वार्टर लग आवि उतरि गेलाह ।

नमस्कार-पातो भेलाक बाद सोमीर प्रकाश रेणुकेँ कहलथिन—तुमि
एह खने थाको, आमी बाजारे ऐक टा जिनीस कीनिते जइबो (तों एहीठाम
रहह, हम तामे मार्केटिंग कयने अबैत छी) ।

पद्मश्री डा. पी. टी. नागराजन् रेणुसँ हाथ मिलौलनि । आगाँ-
आगाँ अपने आ पाछाँ-पाछाँ रेणु विदा भेलाह रेस्ट-रूम कऽ । दूनू गोटे
बैसलाह कि स्प्रिंगदार कोचक गद्दी डेढ़ हाथ नीचाँ धँसि गेलैक । थोड़ेक
काल धरि शतरंज चलैत रहलैक, सऽह पड़ैत रहलैक आ पड़ि गेलैक सऽह
पंखापर जे फूल स्पीडमे चला देल गेलैक आ मात भऽ गेल बल्ब जे मिझा
कऽ कोठलीकेँ अन्हार कऽ देलकैक । पूरा कोठली क्षणमे मौन भऽ गेलैक
आ गुम्हरि उठलैक कारखानाक बड़का मूक बम्मा—डॉ...आँ...आँ...।
जेना थोकर स्वर कनैत होइक—‘प्रमोशन ! प्रमोशन ! जेनरस...काइंड...
पी. टी. नागराजन् ! डिसमिंग फीगर्स ! अनमैरेड !...एबुल ! बोनस !
प्रमोशन....प्रमोशन !...’

इंजीनियर सोमीर प्रोकाशक कार डाइरेक्टर डेरा लग आवि कऽ
फेर लागि गेलनि, केवाड़ खट्खटौलनि तँ भीतरसँ आवाज नहि अयलनि ।

वरंडामे कुर्सीपर बैसि गेलाह । किछुए कालक बाद कोठलीमे लाइट बरि
चठलैक, केवाइ फुजलैक आ हलसि-फुलसि कऽ रेणु कारमे जाकऽ बैसि गेलि ।
कार स्टार्ट भेलैक कि खिड़कीसँ मुँह बहार कऽ डोला-डोला रेणु कहलकनि
वाइ ! वाइ ! फिर मिलेंगे ।

सभ दिनुका जकाँ बम्माक आवाज सुनिते देरी पाँच हजार मजदूर,
बाबू आओर इंजीनियरक दोसर पाली तेसर पालीकेँ काज सोंपि-सोंपि
घर कऽ, डेरा कऽ विदा होमऽ लागल । चिमनी सभ धुँआइत रहल, इञ्जिन
सभ चलैत रहल, बिजली बहैत रहल; घसाइत, घर-घगाइत मशीन सभमे
सभक आशा, सभक मेहनति, सभक अनुभव, सभक योग्यता, सभक श्रम
आ सभ किछु पिसाइत रहल आ मौनव्रती सभ किछु देखनिहार बड़क
घऽरपर खजूरक भऽर दहाइत रहल ।

अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन

मध्य

प्रकाशित

रचना-संग्रह

प्रथम एवं द्वितीय भाग

उच्चकोटिक कथा, कविता, नाटक, निबन्ध, इतिहास आं मैथिली-
साहित्यक आलोचनापर चारि सए पृष्ठसँ अधिकक बृहद् संकलन ।

प्रत्येकक मूल्य पाँच टका मात्र

वितरक : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

बम्बईमे विद्यापति परिषद्क उद्घाटन

परिषद्क उद्घाटन

गत मास बम्बईमे विद्यापति परिषद्क उद्घाटन करैत श्रीमती धनवन्ती रामाराव बजलीह—‘साहित्यक प्राचीन रत्न लोकनिक कृति सभकेँ स्थायित्व प्रदान कयनाइ हमरा लोकनिक कर्तव्य थीक, जाहिसँ नव पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कए सकए ।’

समारोहक अध्यक्ष, नवभारत टाइम्स सम्बद्ध प्रकाशनक प्रधान व्यवस्थापक श्री पी० के० राय कहलन्हि जे जनतन्त्रक एहि युगमे हमरा लोकनिकेँ अपन प्राचीन परम्पराक उपेक्षा नहि करबाक चाही जाहिमे भारतक वास्तविक संस्कृति निहित अछि ।

मुख्य अतिथि श्रीबलराज सहनी बजलाह—‘हमरा लोकनिकेँ अपन सन्त, साधक एवं कवि लोकनिक रचनाकेँ प्रसारित करबा दिसि ध्यान देबक चाही जे हमर भाषा ओ संस्कृतिकेँ जन्म देने छथि ओ हमरा लोकनिकेँ एकताक सूत्रमे आबद्ध कएलन्हि ।’

संगीत साधकक अभिनन्दन

एहि अवसर पर लोक - गीतक प्रचारमे महत्वपूर्ण योगदानक उपलक्ष्यमे वयोवृद्ध संगीतसाधक श्री सचिनदेव बर्मन महोदयक अभिनन्दन सेहो कएल गेल । श्रीबर्मन अभिनन्दनक लेल आभार प्रकट करैत बजलाह जे लोक-गीतमे जनता-जनार्दनक हृत्कम्पन नुकाएल अछि । हम एकर प्रचार-कार्य निरन्तर जारी राखब । फिल्ममे एहि गीत सभक प्रयोग नहि होएत त बड़का टा त्रुटि रहि जाएत ।

प्रारम्भमे विद्यापति परिषद्क संयोजक श्रीविमलचन्द्रदास अतिथि लोकनिक स्वागत करैत बजलाह जे महाकवि विद्यापति एवं अन्य कवि लोकनिक रचना एवं लोक - गीत सभक प्रचार करबाक हेतु एहि संस्थाक स्थापना कएल गेल अछि । ओ श्रीसचिनदेवबर्मनकेँ अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत करैत लोक-गीतक प्रचारमे हुनक सेवाक प्रशंसा कएलन्हि ।

मैथिली गीतक कार्यक्रम

एही अवसरपर वाद्यवृन्द महित मैथिली गीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कयन गेल । गीत सभक धुन बम्बईक उदी-यमान संगीत निर्देशक श्रीविपिन रेशमियाक निर्देशनमे तैयार कएल गेल । कार्यक्रमक श्रीगणेश विद्यापतिक गीत—‘जय जय भैवि’ स भेल । ई गीत कुमार भारती ओ अन्य कलाकार लोकनि प्रस्तुत कएलन्हि । श्रोता लोकनिके ‘गौरा तोरा अंगना’ गीत बडु नोक लगलन्हि । श्रीमती यशोधरा उपोनो दूटा गीत गौलन्हि । एकटा विद्यापतिक ‘कुंज भवन सय निकसलि रे’ आ दोसर श्रीप्रशांतक रचना—‘सिहरल पुरनिक पात सखि हे ।’ कुमार श्रीप्रशान्तक गीत ‘विसरल छी हम अपनहि टाके’ गौलन्हि ।

एहि कार्यक्रमक पैघ विशेषता ई रहल जे बम्बईमे प्रथमहि बेर मैथिलीक गीत वाद्यवृन्दपर प्रस्तुत कएल गेल ।

समारोहमे श्रीमन्ना डे आ श्री हसरत जयपुरीक अतिरिक्त अनेक गण्यमान्य पत्रकार एवं कलाकार उपस्थित छलाह ।

पुस्तक-परिचय

विद्यापति परिषद्, बम्बई उद्घाटन-स्मृति पत्रिका : सम्पादक एवं प्रकाशक—श्रीविमलचन्द्रदास, संयोजक, विद्यापति परिषद्, बम्बई, पृ० १० सुन्दर गेट-अप । मूल्य अलिखित ।

परिषद्क उद्घाटनक उपलक्ष्यमे एकटा सुन्दर स्मृति-पत्रिका Souvenir प्रकाशित कएल गेल जाहिमे अमैथिल ओ अहिन्दी भाषाभाषीक लाभार्थ विद्यापति गीत सभक श्रावृजबिहारी-वर्मा द्वारा अंगरेजीक अनुवाद सेहो प्रकाशित कएल गेल । एहि प्रकारक सामग्रीक प्रकाशन बडु सामयिक एवं उपादेय होइछ । आशे टा नहि अपितु विश्वास अछि जे विद्यापति-परिषद्क संयोजक श्रीविमलचन्द्र-दासजो भविष्यहुमे माँ मैथिलीक सेवामे अपन योगदान दैन रहताह ।

मैथिलीक नवीनतम प्रकाशन

श्रीदुर्गामृत
[द्वितीय संस्करण]

श्रीवेदानन्दभा
आयकर पदाधिकारी
भागलपुर

मूल्य सवा टका

द्वितीय सम्मेलन मध्य प्रकाशित साहित्यपर

हम सम्मेलनमे उपस्थित त नहि मै सकलहुँ, परन्तु; समारोह अभूत-पूर्व सकलतासँ सम्पन्न भेल, ई समाचार पावि अत्यन्त आनन्द भेल । अपनेक द्वारा प्रेषित निम्नांकित पुस्तिका प्राप्त भेल : (१) रचना-संग्रह द्वितीय भाग (२) रचना-संग्रह तृतीय-भाग (३) साहित्य-समीक्षा द्वितीय भाग (४) मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण एवं (५) माननीय श्री सत्यनारायण सिंहक अभिभाषण । समस्त साहित्य सामग्री प्रेरणाप्रद एवं उद्बोधक भावसँ परिपूर्ण अछि । अवलोकन कय बेश लाभान्वित भेलहुँ अछि । आव मैथिली भाषा संविधानक स्वीकृत भाषामे स्थान पावै, यैह मनोरथ आ एकरा लेल जे कोनो यत्न कैल जाए । बिहार विधान सभा कि कोनो प्रस्ताव पारित नहि कै सकैत अछि ?

—श्री आरसीएसदासिह, लखनऊ

द्वितीय अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन सन बृहत् आयोजन अपनहिसँ बनि पड़ल । धन्यवाद । एहि सम्बन्धमे जे प्रकाशन सभ भेल अछि से मात्र प्रशंसनीये टा नहि बरन् स्तुत्य कहल जा सकइयै । अमरजीक 'मैथिली साहित्य'क जे सर्वेक्षण अपने प्रकाशित कएल अछि ओहिसँ मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि आर आनोआन निबन्ध मैथिली साहित्यक गरिमाकेँ बढ़ा रहल अछि । सम्मेलन अपना मे अपूर्ण छल । आशा अछि भविष्यमे आर एहने सम्मेलन होएत रहत ।

—श्री केंसर श्रीवास्तवजी चौधरी

Thanks for your letter and for sending me the books which are written in Maithili and have been published on the occasion of the Second All India Maithili Writers Conference.

—B. Gopal Reddi
Union Minister for Information &
Broadcasting, New Delhi